Str. 863, 27. Die Scholien: लाकायतिका जिप ।

Str. 864, 30. Calc. Ausg. und D. उर्व्या उर्जा 1

Str. 865, 34. Schol. म्रादिशब्दात् शम्बादितस्यार्तनं यन्हणाम

Str. 866, 36. Calc. Ausg. und D. कृष्टि । — Die Scholien: अमृतमित्यन्ये। (wohl प्रमृत; vgl. Manu IV. 5.). — 39. Calc Ausg. D. und E. वृत्तिश्च तोविका, die Scholien wie wir.

Str. 867, 42. Die Scholien: प्रापिणिका र्राप ।

Str. 868, 44. Calc. Ausg. und D. क्रायिक: st. क्रायक:, die Scholien ein Mal: क्रायिक, zwei Male: क्रायक, eine Randbemerkung wie wir.—
45. Calc. Ausg. und D. क्रयहेतु st. क्रेयरे तु, die Scholien wie wir.—
46. Calc. Ausg. und D. वस्तार्थविक्रया:, die Scholien und eine Randglosse wie wir.

Str. 870, 51. Die Scholien: वासनस्थमनच्याय क्रते जन्यस्य यद-र्पितं द्रव्यं तड्डपनिधिः। न्यासः प्रकाशस्थापितं तु यद् नित्तेषः शिल्पिक्-स्ते तु भागडं संस्कर्तुमर्पितमिति। — 52. Dieselben: परिदानमित्येके।

Str. 871, 56. Die Scholien: भ्रवश्यं मंयेतद्विक्रेतव्यमिति सत्यस्य क-रणं सत्यापनम्

Str. 872, 60. Die Scholien: एक एवादिरस्या एकादिका। ग्रादियल्-णाद्दी त्रयश्रवारः। एते वाच्यलिङ्गाः। पञ्च सतित्याद्या प्रष्टादशाला ग्रलि-ङ्गाः। षद्भुब्दस्य त्रपविशेषाभावाह्मिङ्गिपिया नाक्तः। एकानिवंशतित्रिं-शदित्यादयः शताद्वीकस्त्रीलिङ्गाः। षष्टिस्तु त्रिलिङ्गिनिषिये पृष्टिग्लङ्ग उ-कः। ग्रत्र च एकाया ग्रष्टादशालाः संख्येये वर्तते। विशत्यास्तु संख्याश-ब्दा एकावे वर्तमानाः संख्येये संख्याने च वर्तते। यथा। विशतिर्घटाः। विशतिर्घटानाम् शतं गावः। शतं गवामिति। यदाक् वाचस्पतिः।